केन्द्रीय मृदा लवणता संस्थान करनाल में हिन्दी पखवाड़ा समापन व पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित

आज केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल में 14 से 28 सितम्बर 2021 तक आयोजित किए गए हिन्दी पखवाड़े का समापन व पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन संस्थान के सभागार में किया गया। संस्थान के निदेशक डा. प्रबोध चन्द्र शर्मा ने मुख्य अतिथि माननीय राधे श्याम शर्मा पूर्व उपकुलपति गुरू जम्भेश्वर विश्वविद्याल, हिसार का स्वागत किया। यह कार्यक्रम कोविड–19 के नियमों की अनुपालना करते हुए आयोजित किया गया।

मुख्य अतिथि डा0 राधेश्याम शर्मा ने कहा की हिन्दी एक भाषा है। भाषा व्यक्ति को संवेदनशील बनाती है। सबसे ज्यादा संवेदनाए हिन्दी में आती हैं। भाषा जोडने का काम करती है भाषा से व्यक्ति का विकास होता है। हिन्दी सबसे श्रेष्ठ भाषा है। यह राष्ट्र के मूल को सीचती है। जब व्क्ति हिन्दी बोलता है तो 5 गुणा काबिलियत बढती है। अपनी भाषा में अपने विचार प्रभावी ढंग से रखे जा सकते है। हमें हिन्दी बोलने पर गर्व महसूस करना चाहिए। सबसे ज्यादा रोजगार हिन्दी में हैं। शोध कार्य मातृभाषा हिन्दी में होने चाहिए। स्वंत्रतता आंदोलन में हिन्दी का महान योगदान रहा है। संस्थान का अनुसंधान कार्य आम बोलचाल की भाषा में होना चाहिए और भारत में यह भाषा हिन्दी ही हो सकती है। संस्थान अपने शोध कार्यो का प्रकाशन हिन्दी में कर रहा है यह जानकर मुझे बहुत खुशी है। और में इसकी सराहना करता हूँ। भाषा वो ही तरक्की करती है जो अधिक से अधिक शब्द दुसरी भाषाओं के ग्रहण करें। हिन्दी में भी अन्य भाषाओं के बहुत से शब्द स्वीकार किए गए है। अंग्रेजों ने हिन्दी को महत्वहीन करके अंग्रेजी को महत्व दिया है इसलिए वह भारत पर शासन कर पाए। अग्रेंजी में 80 प्रतिशत शब्द ग्रीक व लेटिन भाषा से लिए गए है। यदि हमें पूरे विश्व पर अपना प्रभूत्व कायम करना है तो हमें हिन्दी को अपनाना होगा। नई पीढ़ी को विकास के लिए हिन्दी को नही भूलना चाहिए। जब तक हम हिन्दी का प्रयोग नही करेंगे तो हमारा देश विकसित नही होगा। हमें हिन्दी की प्रतियोगिताओं के माध्यम से हिन्दी का प्रचार–प्रसार बढ़ाना चाहिये और उन्होंने संस्थान में हिन्दी के कार्यों की प्रगति को देखकर प्रसन्नता व संतोष व्यक्त किया और कर्मचारियों से आह्वान किया कि वे अपना अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में करें।

संस्थान के निदेशक डा. प्रबोध चन्द्र शर्मा ने बताया की आजकल लोग अंग्रेजी बोलने वाले लोगों को श्रेष्ठ समझते है। जोकि उचित नही है। देश के प्रधानमंत्री जी भी अपनी बात हिन्दी में करते है। जिस आसानी व लय के साथ हम अपनी हिन्दी भाषा में कर सकते है। वह दूसरी भाषा में नही कर सकते हैं। उन्होने कहा कि हिन्दी विचार प्रकट करने के लिए एक सरल, सशक्त और समृद्ध माध्यम है। हमारे देश की 80 प्रतिशत जनता हिंदी समझ सकती है तथा 65 प्रतिशत जनता इसको बोल व लिख सकती है। विचारों को मूर्त रूप देने के लिए हिंदी सशक्त माध्यम है। हिंदी को आगे बढ़ाना संविधानिक उत्तरदायित्व है। हिंदी 80 देशों में बोली जाती है और 200 विश्वविद्यालयों में पढ़ाई जाती है। आज गूगल, याहू वेबसाइट भी अपना हिंदी में कार्य कर रही है। उन्होंने आह्वान किया कि सभी कर्मचारी हिन्दी अधिक से अधिक कार्य करें।

इस पखवाड़े के दौरान संस्थान में हिन्दी के ज्ञान व प्रयोग को बढ़ाने हेतु आशु भाषण प्रतियोगिता, निबंध लेखन, आवेदन लेखन, हिन्दी टंकण, टिप्पणी एवं मसौदा लेखन, सरकारी काम–काज में मूल हिन्दी आलेखन, प्रश्नोत्तरी, हिन्दी गीत अन्ताक्षरी, कविता पाठ चलवैजयन्ती व वाद–विवाद इत्यादि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। आकर्षक व मनोरंजक अन्ताक्षरी प्रतियोगिता भी आयोजित की गई। प्रतियोगिताओं अध्किारियों व कर्मचारियों ने बढ़–चढ़ कर उत्साहपूर्वक भाग लिया व विजेताओं ने पुरस्कार प्राप्त किये।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि डा0 राधे श्याम शर्मा जी, तथा संस्थान के निदेशक डा. प्रबोध चन्द्र शर्मा ने हिंदी योजना के अंतर्गत वर्ष भर हिन्दी में अधिकाधिक उत्कृष्ट कार्य करने वाले अधिकारियों एवं कर्मचारियो तथा हिन्दी पखवाड़े के दौरान हुई प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार व प्रमाण पत्र वितरित किये। निदेशक महोदय ने पखवाड़े के दौरान आयोजित की गई प्रतियोगिताओं एवं उनमें भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों की सराहना की तथा विजेताओं को हार्दिक बधाई दी। इससे पूर्व हिन्दी पखवाड़ा समिति के अध्यक्ष डा. जोगेन्द्र सिंह ने पखवाड़े की रिपोर्ट प्रस्तुत की तथा डा. कैलाश प्रजापत ने मंच सचालन एवं धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया। इस अवसर पर संस्थान के सभी अधिकारी/कर्मचारी उपस्थित रहे।